IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

बौद्ध स्थल लुम्बिनी का महत्त्व एवं प्रासंगिकता

शिवा (शोध छात्र)

GUIDE

SMT MEETA RATAWA TIWARI

लुम्बिनी महात्मा बुद्ध से संबंधित एक महत्वपूर्ण ऐतिहासिक एवं पुरातात्विक पर्यटन स्थल है, जहां महात्मा बुद्ध की जन्मस्थली लुम्बिनी अवस्थित है। लुम्बिनी एवं उसके आस–पास स्थित अनेक बौद्ध स्थलों को देखने देश–विदेश के पर्यटक बड़ी संख्या में आते हैं। लुम्बिनी जो पहले एक छोटा सा गांव हुआ करता था, आज वह एक विशाल कस्बे का रूप धारण कर रहा है, जिसे नेपाल सरकार ग्रेटर लुम्बिनी नामक परियोजना के तहत यहां के पर्यटन के महत्व को देखते हुए विकसित कर रही है। लुम्बिनी ही नहीं वरन् उसके आस–पास के क्षेत्र में भी पर्यटन एवं सांस्कृतिक गतिविधियों को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महात्मा बुद्ध इंटरनेशनल एयरपोर्ट को विकसित किया गया है। लुम्बिनी के पर्वतीय एवं तराई क्षेत्र में स्थित होने के कारण यहां रेल एवं जल परिवहन का पर्याप्त का विकास नहीं हुआ है, जबकि रेल परिवहन एक सस्ता एवं आसान परिवहन साधन है। वहीं सड़क एवं वायु परिवहन का विकास हो रहा है और वर्तमान में सड़क एवं वायु परिवहन के साधनों के विकास का कार्य प्रगति पर है। इसके लिए लुम्बिनी को कई राष्ट्रीय राजमार्गों एवं राज्य सड़कों से जाड़ने का कार्य भी जारी है तथा वायु परिवहन के अर्न्तगत, महात्मा बुद्ध अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डे का विकास होने से घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में तेजी से बढ़ोतरी हुई है। हालांकि कोरोना वैश्विक महामारी के दौरान घरेलू एवं विदेशी पर्यटकों की संख्या में थोड़ी गिरावट दर्ज हुई थी, परंतु कोरोना महामारी के प्रभाव में कमी आने के पश्चात् पर्यटकों की संख्या में पुनः धीरे–धीरे वृद्धि होने लगी है, जिससे पर्यटन गतिविधियों में अपेक्षित सुधार देखने को मिला है।

महात्मा बुद्ध का जन्म लुम्बिनी (नेपाल) में अवश्य हुआ है, किंतु वह अपने जीवन यात्रा में भारत से अधिक संबंधित रहे हैं। नेपाल में स्थित लुम्बिनी सहित भारत में अवस्थित उत्तर प्रदेश और बिहार राज्यों की सीमायें नेपाल से लगती हैं। जहां महात्मा बुद्ध संबंधी अनेक दर्शनीय स्थल अवस्थित हैं। जिनके दर्शन करने एवं वहां घूमने के लिए आए हुए अनेक पर्यटक हिमालय की गोद में स्थित लुम्बिनी की यात्रा करने के लिए अपने आप आकर्षित होते हैं और पर्यटकों को भारत से भुटवल तक पहुंचने के लिए महात्मा बुद्ध अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा तथा भारत–नेपाल की सीमा पर स्थित नौतनवा नजदीकी रेलवे स्टेशन बेहतर और आसान परिवहन साधन हैं। गौतम बुद्ध अंतर्राष्ट्रीय हवाई अड्डा विभिन्न देशों को वायुमार्ग से जोड़ता है, साथ ही स्थल मार्गों के विकल्प भी उपलब्ध हैं जो पर्यटकों के आवागमन के लिए वर्षपर्यंत खुले रहते हैं।

भारत सरकार द्वारा पर्यटन को बढ़ावा देने के उद्देश्य से अनेक पर्यटन विकल्पों की शुरुआत की गयी, जिनमें "राम वन गमन मार्ग" और "बुद्ध–सर्किट" को अधिक महत्व दिया जा रहा है। जहां "राम वन गमन मार्ग" भगवान राम से संबंधित है, जिसमें भगवान राम द्वारा अपने वनवास के दौरान अपनाए गए मार्गों को इसमें शामिल किया गया है, वहीं "बुद्ध–सर्किट" का संबंध भारत एवं नेपाल में स्थित वह सभी प्रसिद्ध स्थल हैं, जो भगवान बुद्ध से संबंधित है उन्हें एक यातायात पथ के द्वारा जोड़ना एवं बौद्ध पर्यटन तक पर्यटकों की पहुंच को आसान एवं सरल बनाना "बुद्ध–सर्किट" का प्रमुख उद्देश्य है।

इस प्रकार बौद्ध पर्यटन के विकास में सरकार की नीतियों का बहुत गहरा प्रभाव पड़ता है। वर्तमान में स्थिति यह है कि भारत आने वाले बहुत से पर्यटक नेपाल में भी पर्यटन के लिए आकर्षित हो रहे हैं। भारत और नेपाल दोनों पड़ोसी देश हैं, साथ ही नेपाल जाने के लिए कई

स्थल मार्ग भारत से सीधे संपर्क स्थापित करते हैं इसीलिए दोनों देशों के पर्यटक बौद्ध पर्यटन के क्षेत्रों में भ्रमण करने हेतु दोनों देशों के पर्यटक ऐसी यात्रायें करते हैं ये गतिविधियां दोनों देशों के कूटनीतिक रिश्तों को मजबूत बनाने में सहायक होती हैं।

लुम्बिनी का वैश्विक पर्यटन स्थल के रूप में महत्त्व–

धार्मिक इतिहास को स्वीकार करने के लिए तीर्थस्थलों का भ्रमण किया जाता है। पर्यटक लुम्बिनी की यात्रा पर जाते हैं, तो मानसिक तनाव कम होता है और उन्हें शान्ति मिलती है। आमतौर पर पर्यटक स्थानों को देखने और अनुभव करने के लिए यात्रा करते हैं, लेकिन तीर्थयात्रा करने की प्रक्रिया में पर्यटकों को भ्रमण और अनुभव के साथ ज्ञान की प्राप्ति भी होती है। इसीलिए तीर्थयात्रा बौद्ध जीवन का एक अभिन्न हिस्सा है। लुम्बिनी एक अति महत्वपूर्ण तीर्थस्थान है, जो न केवल भगवान बुद्ध का जन्म स्थान है, बल्कि यह एक हीरे की तरह है, जिसे अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर ख्याति प्राप्त होती है। नेपाल अर्थव्यवस्था, बुनियादी ढांचा और उद्योग में विकसित देशों के साथ प्रतिस्पर्धा नहीं कर सकता है। लेकिन शांति के स्रोत लुम्बिनी के साथ अन्य देश शायद ही कभी प्रतिस्पर्धा कर सकेंगे। अब दुनिया युद्ध, गृहयुद्ध नस्लवाद, नक्सलवाद, आतंकवाद, जातिवाद, धर्मवाद, संघर्ष और हत्याओं से भरी हुई है। ऐसे समय में बौद्ध धर्म, ज्ञान, और शांति लुम्बिनी से उत्पन्न हुए और दुनिया में फैले। लुम्बिनी धर्म, लिंग, नस्ल और अन्य भेदभाव से मुक्ति सहित सभी के लिए एक समान गंतव्य स्थान है। तीर्थयात्री ज्ञान और शुद्धि के लिए तीर्थस्थलों की यात्रा करते हैं और मानते हैं कि यह मृत्यु के बाद यह निर्वाण प्राप्ति का रास्ता दिखाएगा। तीर्थयात्रा के लिए कोई बाध्यता नहीं है, लेकिन यह निर्वाण प्राप्त करने का एक तरीका हो सकता है। यह पर्यटकों के लिए एक महत्वपूर्ण शांति पर्यटन स्थल भी है।

लुम्बिनी को न केवल भौतिक, बल्कि आध्यात्मिक रूप से भी विकसित किया किया जाना चाहिए। महान विरासत स्थल, व्यक्तिगत धार्मिक आस्था की परवाह किए बिना हर किसी के लिए आकर्षण का केंद्र है। इसीलिए यह तार्किक और प्रासंगिक भी है, कि लुम्बिनी संपूर्ण शांतिप्रिय लोगों के साथ–साथ ऐतिहासिक और पुरातात्विक रुचि वाले समूहो के लिए श्रद्धा एवं पर्यटन का स्थान है। आज लुम्बिनी को विश्व शांति केंद्र का पर्याय और विश्व में प्रथम श्रेणी का तीर्थस्थल माना जाता है। लुम्बिनी बौद्धों के लिए सबसे महत्वपूर्ण और सबसे महान पवित्र स्थलों में से एक है। दुनिया भर के पर्यटकों के साथ–साथ बौद्ध पर्यटक भी समान रूप से लोकप्रिय लुम्बिनी की यात्रा पर गर्व और जीवन संतुष्टि महसूस करते हैं। दुनिया भर में गैर–बौद्ध आगंतुकों के बीच विरासत व पर्यटन दोनों की दृष्टि से लुम्बिनी कई अन्य विरासतों से अलग है। लुम्बिनी दुनिया का सबसे महत्वपूर्ण बौद्ध स्थल है, जो गैर बौद्ध आबादी से घिरा हुआ है, जो इसकी विरासत के संरक्षण और प्रबंधन में बड़ी बाधा है। यह जटिलता विरासत की सामुदायिक भागीदारी के लिए और जटिल हो जाती है। जो विरासत संरक्षण और विकास के लिए एक प्रमुख चुनौती है। विरासत अकसर राष्ट्रवाद उत्पन्न करने, राजनीतिक शक्ति को उचित ठहराने और राजनीतिक कारणों के लिए अंतर्राष्ट्रीय समर्थन प्राप्त करने का एक राजनीतिक संसाधन है। लुम्बिनी अद्वितीय विरासत स्थल है, क्योंकि बहुतायत स्थानीय लोग विशेष रूप से मुस्लिम इस विरासत के मालिक नहीं है और उनका इससे कोई व्यक्तिगत लगाव नहीं है।

लुम्बिनी मास्टर प्लान, लुम्बिनी के इतिहास भूगोल, वास्तुकला, दर्शन, संस्कृति और परंपरा की प्रमाणिकता में बदलाव किए बिना संरक्षण और विकास के लिए एक महत्वाकांक्षी और एकीकृत योजना है। यह लुम्बिनी के विकास के लिए एक तंत्रिका तंत्र है। लुम्बिनी का संरक्षण और विकास निश्चित रूप से लुम्बिनी को राष्ट्रीय और अंतर्राष्ट्रीय स्तर पर प्रस्तुत करता है। लुम्बिनी मास्टर प्लान (1970) द्वारा कवर किया गया कुल क्षेत्रफल 112.21 वर्ग किमी0 (43.32 वर्ग मील) जो 13 नगरपालिका वार्डों में विभाजित है साथ ही लुम्बिनी को तीन परिक्षेत्रों– पवित्र उद्यान क्षेत्र, मठ क्षेत्र और न्यू लुम्बिनी गाँव में विभाजित किया गया है।

यह योजना कला, वास्तुकला, बौद्ध दर्शन और कल्पना का संयोजन है। पवित्र उद्यान क्षेत्र के प्राकृतिक वातावरण क्षेत्र को बनाए रखने के लिए उसके आसपास कंक्रीट की स्थापना निषिद्ध है। यहां एक ऐसा माहौल है जहां सम्पूर्ण मानव जाति विश्व शांति प्राप्त कर सकती है। लुम्बिनी परिसर के चारों ओर शांत और हरे भरे जंगल के हाल ही में पुनर्निमित वातावरण के केंद्र में पवित्र उद्यान, आश्रय और प्राचीन स्मारक है इसके अलावा मठवासी क्षेत्र पवित्र उद्यान के उत्तर में वन क्षेत्र के भीतर केंद्र में स्थित है, जिसे दो हिस्सों पूर्वी और पश्चिमी मठवासी क्षेत्र में

विभाजित किया गया है इस स्थल का उत्तरी भाग न्यू लुम्बिनी गाँव के लिए विकसित किया जा रहा है, जो बाहरी दुनिया का प्रवेश द्वार भी है। जहां आगन्तुक आरामदायक लॉज, रेस्टोरेंट, होटल, धर्मशाला, एक क्रेन अभ्यारण्य और एक शान्ति पैंगोड़ा पा सकते हैं।

एक अवधारणा के रूप में इसका विकास सबसे पहले कोहेन (1972), प्लॉग (1974), स्मिथ (1977), द अमेरिकन एक्सप्रेस (1989), उरी (1990), पून (1993), हार्नर और स्वारब्रुक (2007) द्वारा विकसित की गयी यह अवधारणा एक तरफ पर्यटन विपणन और दूसरी तरफ प्रभाव मूल्यांकन में मदद करती है। बौद्ध तीर्थयात्रियों और गैर–बौद्ध तीर्थयात्रियों द्वारा विरासत का उपयोग काफी अलग है। बौद्ध तीर्थयात्री इस स्थल पर ध्यान करते हैं, स्मारकों और मंदिरों में पूजा करने जाते हैं जबकि गैर–बौद्ध पर्यटक इतिहास, स्मारकों, पुरातात्विक स्थान की संपूर्ण सुंदरता पर रुचि रखते हैं। जिन्हें विशिष्ट रूप से सामान्य पर्यटक प्रेमी कहा गया है।

पवित्र तीर्थयात्री जिनकी यात्रा का उद्देश्य शुद्ध धार्मिक है– भिक्षु और लामा, और आध्यात्मिक प्रवासी, गृहस्थ बौद्ध और हिंदू तीर्थयात्री होते हैं विभिन्न विषयों में ज्ञान चाहने वाले छात्र होते हैं, जो कभी–कभी शिक्षा के उद्देश्य से अकेले और कभी समूह में आते हैं। इसलिए इन्हें धर्मनिरपेक्ष पर्यटक कहा जा सकता है। लुम्बिनी, कपिलवस्तु, देवदहा, राम–ग्राम और अन्य स्थल उन लोगों के लिए जीवित प्रयोगशालाएं हैं, जो बौद्ध स्थलों की प्रमाणिकता के बारे में गहरी रुचि रखते हैं।

लुंबिनी में संयुक्त राष्ट्र महासचिवों का आगमन

लुम्बिनी संयुक्त राष्ट्र महासचिवों के लिए रुचि का केंद्र रहा है। मार्च 1959 में डैग, हैमरस्कजॉल्ड ने दौरा किया। "लुम्बिनी और एक कविता" शीर्षक में भगवान बुद्ध के जन्म एवं उनके जन्म स्थान का संदर्भ दिया गया था, जो उनकी मृत्यु के बाद उनके न्यूयॉर्क अपार्टमेंट में जर्नल प्रविष्टियों में पाया गया था। यू–थान्ट ने घोषणा की, कि अप्रैल 1967 में लुम्बिनी की उनकी यात्रा जीवन की सबसे महत्वपूर्ण यात्राओं में से एक थी। यह उनके जीवन का सबसे महत्वपूर्ण दिन था और उन्होंने लुंबिनी के विकास के लिए संयुक्त राष्ट्र की पहल को गति दी। बॉन–की–मून ने नवंबर 2008 में लुम्बिनी का दौरा किया और तब से उन्होंने कई मौकों पर लुम्बिनी के विकास के लिए अपना मजबूत समर्थन व्यक्त किया।

डैग हैमरस्क जॉल्ड– मार्च, 1959 में लुम्बिनी का दौरा किया जिसके बारे में उन्होंने अपनी एक कविता में जिक्र किया है–

चमकदार सूरज की किरणों की तरह।

बांसुरी के स्वर जन्म कुटी में।

देवताओं तक पहुंचाते हैं।।

यू थांट– लुंबिनी की यात्रा "मेरे जीवन के सबसे महत्वपूर्ण दिनों में से एक थी"। 1968 की शुरुआत से नेपाल सरकार और संयुक्त राष्ट्र संगठन दोनों के द्वारा विकास कार्यों में विभिन्न चरण पूरे किए गए हैं और परियोजना अब उस स्तर पर पहुंच गई है जहां इसे पर्याप्त तीर्थयात्रा केंद्र बनने से पहले स्वैच्छिक योगदान और वित्त पोषण की आवश्यकता तीर्थयात्रियों और पर्यटकों की सुविधाओं के लिए होगी। इस संबंध में मैं नेपाल सरकार द्वारा पहले ही की गई इन पहलों लिए अपनी व्यक्तिगत सराहना व्यक्त कर चुका हूं। मैं यह भी आशा व्यक्त करता हूं कि इच्छुक सरकारें, व्यक्ति और निजी समूह उदारता दिखाएंगे। जिसे मैं सबसे योग्य परियोजना मानता हूं, उसके कार्यान्वयन में मदद के लिए नगद और वस्तु के रूप में योगदान देना चाहता हूँ।

कर्ट वॉल्ट हेम– (फरवरी 1981) नेपाल सरकार के प्रयासों और संयुक्त राष्ट्र विकास कार्यक्रम की वित्तीय सहायता से जापानी वास्तुकार केंजो टांगे द्वारा लुंबिनी का एक मास्टर प्लान तैयार किया गया है हालांकि इन योजनाओं का वास्तविक बनाना आवश्यक है, इसीलिए यह मेरी आशा है कि सरकार, निजी संस्थान और व्यक्ति इस सबसे महत्वपूर्ण उपक्रम के लिए उदार योगदान देंगे।

जेवियर पेरेज़डी कुएलर– (मार्च 1989) "बुद्ध का करुणा और मानवता की सेवा के प्रति समर्पण का संदेश इतिहास में किसी भी अन्य समय की तुलना में आज अधिक प्रासंगिक है। शांति समझ और एक दृष्टि जो पूरी तरह से राष्ट्रीय सीमाओं से परे है हमारे असुरक्षित परमाणु युग की अनिवार्यता है।"

संयुक्त राष्ट्र को शुरू से ही इस परियोजना का पूरे दिल से समर्थन करने पर गर्व है। मैं इस अवसर पर यह कहना चाहता हूं, कि वह इस उपक्रम के समर्थन में अपनी भूमिका निभाना जारी रखेगा। जो आध्यात्मिक और सांस्कृतिक विरासत और मानवता से सबसे निकटता से संबंधित है।

बुतरस बुतरस घाली– लुंबिनी मास्टर प्लान का कार्यान्वन अभी भी प्रगति पर है, मैं अंतर्राष्ट्रीय समुदाय में सरकारों, निजी संस्थाओं और व्यक्तियों से बुद्ध की करुणा और भक्ति की परंपरा को संरक्षित करने और मानवता की सेवा के लिए योगदान देने पर विचार करने का आह्वान करना चाहता हूँ।

काफी अन्नान– दुनिया में बौद्धों के लिए सबसे पवित्र स्थल के रूप में लुम्बिनी सीमाओं और समय के पार सभी लोगों के अंतर्सम्बन्धों का एक और उदाहरण प्रदान करता है। संयुक्त राष्ट्र शैक्षिक, वैज्ञानिक और सांस्कृतिक संगठन (यूनेस्को) विश्व विरासत स्थल के रूप में लुम्बिनी हमें याद दिलाती है, कि दुनिया के धर्म हमें बौद्ध और गैर–बौद्ध, आस्तिक और गैर–आस्तिक समान रूप से कितना कुछ सीखा सकते हैं और आइये हम इस सहिष्णुता के प्रति उस प्रतिबद्धता की सराहना करें, जो एक बौद्ध शिखर सम्मेलन का आधिकारिक तौर पर हिंदू देश में आयोजित करने की अनुमति देता है धार्मिक सद्भाव के ऐसे कई और उदाहरण का उपयोग करना चााहिए।

बान की मून– (नवंबर 2008) मैं भगवान बुद्ध की जन्मस्थली, इस स्थल की सुंदरता और व्यापक महत्व से आश्चर्य चकित हूं। यहां आकर मुझे आश्रय प्राप्त राजकुमार से लेकर दुनिया के महान धर्मों में से एक के संस्थापक तक की उनकी अद्भुत जीवन यात्रा की याद आती है और मैं इससे प्रभावित हूं। जीवन की दर्दनाक वास्तविकताओं का सामना करने और दूसरों को उनसे उबरने में मदद करने के लिए स्वेच्छा से आरामदायक परिस्थितियों को छोड़ने का उनका उदाहरण संयुक्त राष्ट्र महासचिव के रूप में मैं पूरी ईमानदारी से दुनिया भर में शांति के लिए काम करने हेतु और अधिक प्रेरित हुआ हूँ। आशा है कि हम विभिन्न मान्यताओं, विभिन्न धर्मों और संस्कृतियों के लोगों के बीच शांति, स्थिरता, सद्भाव, मेल मिलाप और मित्रता लाने के लिए उनके पाठों, उनकी शिक्षाओं और उनके दर्शन एवं ज्ञान से भी सीख सकते है। यही वह चीज है जिसे मनुष्य को बढ़ाना चाहिए और बेहतरी के लिए प्रयास करते रहना चाहिए, ताकि विश्व अधिक शांतिपूर्ण, अधिक समृद्ध हो सके।

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की लुम्बिनी यात्रा–

प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी की 16 मई 2022 की लुम्बिनी (नेपाल) यात्रा प्रतीकात्मकता और सार्थकता से परिपूर्ण रही है। उनकी यह यात्रा निम्नलिखित बातों का प्रतीक है–

- श्री मोदी की यात्रा व्यक्तिगत इच्छाशक्ति, राजनीतिक एवं रणनीतिक लक्ष्यों का संयोजन है।
- प्रधानमंत्री की यह यात्रा शांत चिंतन और बुद्ध द्वारा प्रचारित शांति, करुणा और हिंसा के संदेश को दोहराने का अवसर भी प्रदान करती है।
- यह यात्रा राजनीतिक और रणनीतिक भी है तथा भारत के लिए इस क्षेत्र में और अधिक कार्य करने का उपयुक्त समय है।
- अपनी यात्रा के दौरान प्रधानमंत्री द्विपक्षीय वार्ता के लिए नेपाली समकक्ष शेर बहादुर देउबा से मुलाकात की।
- लुम्बिनी मठ क्षेत्र में भारतीय अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति एवं विरासत केन्द्र के शिलान्यास समारोह में भारतीय प्रधानमंत्री की भागीदारी भी महत्त्वपूर्ण रही है।
- उनकी इस यात्रा का उद्देश्य प्राचीन संबंधों का जश्न मनाना है तथा उन्हें और प्रगाठ बनाना है, जो सदियों से पोषित होते रहे हैं तथा दोनों देशों के आपसी मेल–जोल के लम्बे इतिहास में दर्ज हैं।

ऐसा माना जाता है कि भगवान बुद्ध का जन्म 623 ईसा पूर्व में दक्षिणी नेपाल के तराई के मैदानों में स्थित लुम्बिनी के पवित्र क्षेत्र में हुआ था। भारत के सम्राट अशोक ने वहां एक स्मारक एवं लौह स्तम्भ बनवाया था। इस स्थल को अब बौद्ध तीर्थस्थल के रूप में विकसित किया जा रहा है। जहां भगवान बुद्ध के जन्म से जुडे पुरातात्विक अवशेष केन्द्रीय विशेषताओं का निर्माण करेंगे।

पुरातात्विक संरक्षण क्षेत्र के भीतर संरचनाओं के परिसर में शामिल हैं–

- माया देवी मंदिर के भीतर तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से लेकर वर्तमान शताब्दी तक के अवशेष ।
- बलुआ पत्थर से बना अशोक स्तम्भ जिस पर ब्राह्मी लिपि में पाली शिलालेख है।
- तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से पांचवीं शताब्दी ईस्वी तक के बौद्ध विहारों (मठों) के उत्खनन से प्राप्त अवशेष ।
- तीसरी शताब्दी ईसा पूर्व से 15 वीं शताब्दी ईस्वी तक के बौद्ध स्तूपों (स्मारकों, मंदिरों) के अवशेष ।
- लुम्बिनी और बोधगया स्थित महाबोधि मंदिर दोनों ही यूनेस्को के विश्व धरोहर स्थल हैं।
- लुम्बिनी में पहला विदेशी मठ एक वियतनामी भिक्षु थाए हुएन दियु द्वारा बनाया गया था।
- भारत का लुम्बिनी में कोई मठ नहीं है।
- सबसे बड़ा मठ चीनियों द्वारा बनाया गया है, जो नेपाल में बौद्ध धर्म पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलनों को प्रायोजित और समर्थन करते हैं, साथ ही बैसाखी जैसे बौद्ध त्यौहारों के विशाल समारोहों का भी आयोजन करते हैं।

भारत लुम्बिनी के विकास में एक सहायक की भूमिका में–

भारतीय मठ – श्री मोदी की यह यात्रा स्थिति को सुधारने तथा नेपाल में एक भारतीय मठ की स्थापना की घोषणा करने का उपयुक्त समय है।

लुम्बिनी का विकास– भारत संयुक्त राष्ट्र द्वारा गठित अन्तर्राष्ट्रीय समिति के साथ मिलकर लुम्बिनी के विकास में सहायता कर सकता है।

बुद्ध सर्किट– नेपाल और भारत के प्रमुख बौद्ध तीर्थस्थलों के बीच निर्बाध संपर्क और आरामदायक यात्रा के लिए एक बुद्ध सर्किट विकसित करने की दिशा में प्रयासरत है।

बुनियादी ढांचे का विकास– एकीकृत चेक पोस्ट के अतिशीघ्र निर्माण से पर्यटन और स्थानीय अर्थव्यवस्था को भी बढावा मिलेगा।

अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध संस्कृति एवं विरासत केन्द्र का निर्माण –

प्रधानमंत्री मोदी ने अपनी यात्रा के दौरान नेपाल के लुम्बिनी में एक अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध विरासत केन्द्र के निर्माण की आधाराशला रखी। इस केन्द्र के निर्माण पर लगभग एक अरब रुपये की लागत आने तथा इसके पूरा होने में तीन वर्ष लगने का अनुमान है। इस केन्द्र का निर्माण अन्तर्राष्ट्रीय बौद्ध परिसंघ (आई की सी), नई दिल्ली द्वारा किया जाएगा। उसका निर्माण पूरा हो जाने पर यह केन्द्र एक विश्व स्तरीय सुविधा होगी, जो बौद्ध धर्म के आध्यात्मिक पहलुओं का आनंद लेने के लिए दुनियाभर से तीर्थयात्रियों और पर्यटकों का स्वागत करेगी।

यह एक आधुनिक भवन होगा जो ऊर्जा, जल और अपशिष्ट प्रबंधन के मामले में नेट जीरो मानकों का अनुपालन करेगा, तथा इसमें प्रार्थना कक्ष, ध्यान केन्द्र, पुस्तकालय, प्रदर्शनी हॉल, कैफेटेरिया, कार्यालय और अन्य सुविधाएं होंगी।

बुद्ध सर्किट विकसित करने हेतु भारत की भूमिका बोधगया के लिए मास्टर प्लान– भारत को एक मास्टर प्लान अपनाने और बोधगया को लुम्बिनी की तरह विकसित करने पर विचार कर सकता है।

समिति– समस्याओं के समाधान के लिए राज्य एवं केन्द्र सरकार के साथ–साथ विदेशी मठों के प्रतिनिधियों की उच्च स्तरीय समन्वय समिति गठित की जानी चाहिए।

यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल– संपूर्ण बौद्ध परिपथ यानी लुंबिनी–बोधगया– सारनाथ–कुशीनगर को यूनेस्को की विश्व धरोहर स्थल (भ) घोषित करवाने के लिए प्रयास किए जाने चाहिए।

अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन– भारत बौद्ध देशों को भागीदारी और स्वामित्व की भावना देने के लिए बुद्ध सर्किट के विकास पर अन्तर्राष्ट्रीय सम्मेलन आयोजित करने की पहल भी कर सकता है।

अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय– भारत बोधगया में बौद्ध परंपरा का एक अन्तर्राष्ट्रीय संग्रहालय भी स्थापित कर सकता है और इसमें भाग लेने के लिए सभी बौद्ध देशों को आमंत्रित कर सकता है।

लुम्बिनी तीर्थयात्रा–

बौद्ध धर्मग्रन्थों में एक महत्वपूर्ण प्रवचन, परिनिर्वाण सुत्त में, बुद्ध ने स्वयं अपने जीवन से जुड़े चार महत्वपूर्ण तीर्थस्थानों का उल्लेख किया है। जिनमें वह स्थान जहाँ उनका जन्म हुआ (लुम्बिनी), वह स्थान जहाँ उन्हें ज्ञान की प्राप्ति हुई (बोघगया)। वह स्थान, जहां उन्होंने अपना प्रथम उपदेश दिया (सारनाथ)। वह स्थान, जहाँ उन्होंने महापरिनिर्वाण प्राप्त किया (कुशीनगर)। इनमें से लुम्बिनी उनके जन्मस्थल के रूप में एक विशेष स्थान रखता है। इस घटना को मानव इतिहास में सबसे महत्वपूर्ण क्षणों में से एक माना जाता है। जो एक आध्यात्मिक गुरु के जन्म को चिन्हित करता है जिनकी शिक्षाएं आने वाली सदियों तक लाखों लोगों के जीवन को गहराई से प्रभावित करेंगी।

बौद्ध धर्मावलियों के लिए लुम्बिनी जाना महज एक प्रतीकात्मक कार्य नहीं है, बल्कि उस स्थान की एक गहन अर्थपूर्ण तीर्थयात्रा है। जहाँ से उनकी आध्यात्मिक यात्रा शुरू हुई थी। लुम्बिनी में उत्खनन से खंडहर और कलाकृतियाँ मिली हैं जो प्राचीन सभ्यताओं के बारे में जानकारी देती हैं जिन्होंने इस स्थल को अन्तर्राष्ट्रीय ख्याति प्राप्त करने से बहुत पहले से ही सम्मान दिया था। महान सम्राट अशोक ने अशोक स्तम्भ का निर्माण कराया था, जो प्राचीन काल से इस पवित्र स्थल की तीर्थ यात्रा के महत्व की जीवंत याद दिलाता है। माया देवी मंदिर ठीक उसी स्थान पर बना है, जहाँ महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ था। दुनिया भर से तीर्थयात्री उस पवित्र स्थान पर श्रद्धांजलि अर्पित करने, प्रार्थना करने और ध्यान लगाने के लिए, प्रेरणा और आशीर्वाद प्राप्त करने आते हैं। लुम्बिनी की शांति और पवित्रता आत्मनिरीक्षण और आध्यात्मिक विकास के लिए अनुकुल वातावरण प्रदान करती है।

बुद्ध के जन्म स्थान के रूप में लुम्बिनी का महत्व धार्मिक सीमाओं से परे है, जो विद्वानों, इतिहासकारों और बौद्ध धर्म की उत्पत्ति और उसके ऐतिहासिक संदर्भ की खोज में रुचि रखने वाले पर्यटकों को आकर्षित करता है। लुम्बिनी में किए गए सावधानी पूर्वक संरक्षण और विकास के प्रयास यह सुनिश्चित करते हैं कि आने वाली पीढ़ियाँ बुद्ध के जन्म की गहन विरासत और उनकी शिक्षाओं के स्थायी प्रभाव का अनुभव करना जारी रख सकें। इस प्रकार लुम्बिनी बुद्ध द्वारा सन्निहित कालातीत ज्ञान और सार्वभौमिक करुणा का एक प्रमाण है, जो उन सभी को आमंत्रित करता है जो ज्ञान की तलाश में हैं उन्हें दुनिया के सबसे महान आध्यात्मिक नेताओं में से एक के जन्म स्थान की परिवर्तनकारी तीर्थयात्रा पर जाना चाहिए।

सन्दर्भ–ग्रथ सूची

1. न्यूपेन, 2009 पृष्ठ सं0 157
2. न्यूपेन, 2009 पृष्ठ सं0 161
3. थिमिरे, 2011 पृ0 सं0 47
4. न्यूपेन, 2009 पृष्ठ सं0 166
5. ग्लिप्टिस 1989, 1991 हिंच और हिगम 2006 पृष्ठ सं0 34

6. स्टेबिन्स, 1996, 1997 एप्रेटिंस 2006 पृष्ठ सं0 170

7. केंजो टैंज मास्टर प्लान

8. द हिन्दू 18 मई, 2022

9. नेपाल पर्यटन समाचार डाइजेस्ट पीले पृष्ठ 2009

10. लुम्बिनी विकास ट्रस्ट, नेपाल

11. यूनेस्को विश्व धरोहर स्थल सूची, 1999

12. आवज्रन विभाग, नेपाल